पवित्र क़ुरआन

अनुवादक

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ

GOODWORD BOOKS

जो तुम नहीं जानते, (31) और अल्लाह ने सिखा दिये आदम को सारे नाम, फिर उनको फ़रिश्तों के समक्ष प्रस्तुत किया और कहा कि यदि तुम सच्चे हो तो मुझे इन लोगों के नाम बताओ। (32) फ़रिश्तों ने कहा कि तू पवित्र है। हम तो वही जानते हैं जो तूने हमको बताया। निस्सन्देह, तू ही ज्ञान वाला और तत्त्वदर्शी है। (33) अल्लाह ने कहा ऐ आदम, उनको बताओ उन लोगों के नाम। तो जब आदम ने बताये उनको उन लोगों के नाम तो अल्लाह ने कहा क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि आसमानों और पृथ्वी के भेद को मैं ही जानता हूँ। और मुझको ज्ञात है जो कुछ तुम प्रकट करते हो और जो कुछ तुम छिपाते हो।

(34) और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो, तो उन्होंने सजूदा किया, परन्तु इबलीस ने सजदा न किया। उसने अवज्ञा की और घमण्ड किया और अवज्ञाकारियों में से हो गया। (35) और हमने कहा ऐ आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी दोनों जन्नत (स्वर्ग के बाग़) में रहो और उसमें से खाओ इच्छाभर, जहाँ से चाहो। और उस वृक्ष के निकट मत जाना अन्यथा तुम अत्याचारियों (ज़ालिमों) में से हो जाओगे। (36) फिर शैतान (इबलीस) ने उस वृक्ष के माध्यम से दोनों को विचलित कर दिया और उनको उस आनंदमय जीवन से निकाल दिया जिसमें वह थे। और हमने कहा तुम सब उतरो यहाँ से। तुम एक दूसरे के दुश्मन (शत्रु) होगे। और तुम्हारें लिए पृथ्वी में ठहरना और काम चलाना है एक अवधि तक। (37) फिर आदम ने सीख लिये अपने पालनहार से कुछ बोल (शब्द) तो अल्लाह ने उस पर दया की। निस्सन्देह वह तौबा (क्षमा-याचना) को स्वीकार करने वाला, दया करने वाला है। (38) फिर हमने कहा तुम सब यहाँ से उतरो। फिर जब आये तुम्हारे पास मेरी ओर से कोई मार्गदर्शन तो जो लोग मेरे मार्गदर्शन का अनुसरण करेंगे, उनके लिए न कोई डर होगा और न वह शोकाकुल होंगे। (39) और जो लोग अवज्ञा करेंगे और हमारी निशानियों को झुठलायेंगे तो वही लोग नरक वाले हैं, वह उसमें सदैव रहेंगे।

(40) ऐ इस्राईल की सन्तान ! याद करो मेरे उस उपकार को, जो मैंने तुम्हारे ऊपर किया, और मेरे वचन को पूरा करो, मैं तुम्हारे वचन को पूरा करुँगा। और मेरा ही डर रखो। (41) और ईमान लाओ उस चीज़ (क़ुरआन) पर जो मैंने भेजी है। पुष्टि करती हुई उस किताब की जो तुम्हारे पास है और तुम सबसे पहले इसके झुठलाने वाले न बनो। और न लो मेरी

आयतों पर थोड़ा मोल। और मुझसे डरो। (42) और सच में झूठ को न मिलाओ और सच को न छिपाओ जबकि तुम जानते हो। (43) और नमाज़ स्थापित करो और ज़कात अदा करो और झुकने वालों के साथ झुक जाओ। (44) तुम लोगों से भला कर्म करने को कहते हो और अपने आपको भूल जाते हो। हालाँकि तुम किताब को पढ़ते हो, क्या तुम समझते नहीं। (45) सहायता चाहो धैर्य और नमाज़ से और निस्सन्देह वह भारी है परन्तु उन लोगों पर नहीं, जो डरने वाले हैं। (46) जो समझते हैं कि उनको अपने पालनहार से मिलना है और वह उसी की ओर लौटने वाले हैं।

(47) ऐ इस्राईल की सन्तान ! मेरे उस उपकार को याद करो जो मैंने तुम्हारे ऊपर किया और इस बात को कि मैंने तुमको संसार वालों पर प्रधानता दी। (48) और डरो उस दिन से जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के काम न आयेगा। न उसकी ओर से कोई सिफ़ारिश (recommendation) स्वीकार होगी। और न उससे बदले में कुछ लिया जायेगा और न उनकी (अपराधियों) की कोई सहायता की जायेगी। (49) और (याद करो) जब हमने तुमको फ़िरऔन के लोगों से छुटकारा दिलाया, वह तुमको बहुत कष्ट देते थे, तुम्हारे बेटों की हत्या करते और तुम्हारी बेटियों को जीवित रखते। और इसमें तुम्हारे पालनहार की ओर से भारी परीक्षा थी। (50) और (याद करो वह समय) जब हमने नदी को फाड़कर तुम्हें पार कराया। फिर बचाया तुमको और डुबा दिया फ़िरऔन के लोगों को, और तुम देखते रहे। (51) और जब हमने बुलाया मूसा को चालीस रात के वादे पर, फिर तुमने उसकी अनुपस्थित में बछड़े को पूज्य बना लिया और तुम अत्याचारी (ज़ालिम) थे। (52) फिर हमने उसके बाद तुमको क्षमा कर दिया ताकि तुम आभार व्यक्त करने वाले बनो। (53) और जब हमने मूसा को किताब दी और फ़ैसला करने वाली वस्तु ताकि तुम मार्ग पा सको। (54) और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम ! तुमने बछड़े को ईश बनाकर अपने आप पर भारी अत्याचार किया है। अब अपने पैदा करने वाले की ओर अपना ध्यान करो और अपने अपराधियों की अपने हाथों से हत्या करो। यह तुम्हारे लिए तुम्हारे पैदा करने वाले के निकट उचित है। तो अल्लाह ने तुम्हारी तौबा (क्षमा-याचना) स्वीकार की। निस्सन्देहः वह बड़ा तौबा स्वीकार करने वाला, अत्यन्त दयावान है। (55) और जब तुमने

कहा कि ऐ मूसा, हम तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे जब तक कि हम अल्लाह को साक्षात अपने सामने न देख लें, तो तुमको बिजली के कड़के ने पकड़ लिया और तुम देख रहे थे। (56) फिर हमने तुम्हारी मृत्यु के पश्चात् तुमको उठाया ताकि तुम कृतज्ञ बनो। (57) और हमने तुम्हारे ऊपर बादलों की छाया की और तुम पर मन्न (बटेर जैसा पक्षी) और सलवा (उपकार के रूप में एक विशेष खाद्य) उतारा। खाओ सुथरी चीज़ों में से जो हमने तुमको दी हैं और उन्होंने हमारा कुछ नहीं बिगाड़ा, बल्कि वह अपना ही नुकसान करते रहे।

(58) और जब हमने कहा कि प्रवेश करो इस नगर में और खाओ इसमें से जहाँ से चाहो, अपनी इच्छानुसार और प्रवेश करो द्वार में सिर झुकाये हुए, और कहो, कि ऐ पालनहार ! हमारे पापों को दूर कर दे। हम तुम्हारे पापों को दूर कर देंगे और भलाई करने वालों को अधिक भी देंगे। (59) तो अत्याचारियों ने बदल दिया उस बात को, जो उनसे कही गयी थी एक दूसरी बात से। इस पर हमने उन लोगों के ऊपर जिन्होंने अत्याचार किया, उनकी कृतघ्नता के कारण आकाश से प्रताड़ना उतारी। (60) और याद करो वह समय, जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिए पानी माँगा, तो हमने कहा अपनी लाठी पत्थर पर मारो, तो उससे फूट निकले बारह स्रोत। प्रत्येक समूह ने अपना-अपना घाट पहचान लिया। खाओ और पियो अल्लाह की दी हुई जीविका से और ज़मीन में बिगाड़ फैलाने वाले बनकर न फिरो। (61) और याद करो, जब तुमने कहा, ऐ मूसा, हम एक ही प्रकार के खाने पर कदापि सन्तोष नहीं कर सकते। अपने पालनहार को हमारे लिए पुकारो कि वह निकाले हमारे लिए, जो उगता है धरती से, साग और ककड़ी और गेहूँ और मसूर और प्याज़। मूसा ने कहाः क्या तुम एक उत्तम चीज़ के बदले एक मामूली चीज़ लेना चाहते हो। किसी नगर में उतरो तो तुमको मिलेगी वह चीज़ जो तुम माँगते हो, और डाल दिया गया उन पर अपमान और निर्धनता और वह अल्लाह के क्रोध के भागी हो गये। यह इस कारण से हुआ कि वह अल्लाह की निशानियों को झुठलाते थे और पैग़म्बरों की अकारण हत्या करते थे। यह इस कारण से कि उन्होंने अवज्ञा की और वह हद पर न रहते थे।

(62) निस्संदेह, जो लोग मुसलमान हुए और जो लोग यहूदी हुए और नसारा (ईसाई) और साबी, उनमें से जो व्यक्ति ईमान लाया अल्लाह पर और आख़िरत (परलोक) के दिन पर और उसने भले कर्म किये तो उसके लिए उसके पालनहार

के पास (अच्छा) बदला है। और उनके लिए न कोई भय है और न वह दुःखी होंगे।

(63) जब हमने तुमसे तुम्हारा वचन लिया और तूर पहाड़ को तुम्हारे ऊपर उठाया। पकड़ो उस वस्तु को जो हमने तुमको दी है दृढ़ता के साथ, और जो कुछ इसमें है उसको याद रखो ताकि तुम बचो। (64) इसके बाद तुम उससे फिर गये। यदि अल्लाह की कृपा और उसकी दया तुम पर न होती तो अवश्य तुम विनष्ट हो जाते। (65) और उन लोगों की हालत तुम जानते हो जिन्होंने सब्त (शनिवार) के सम्बन्ध में अल्लाह के आदेशों को तोड़ा, तो हमने उनको कह दिया तुम लोग अपमानित बन्दर बन जाओ। (66) फिर हमने इसको शिक्षा प्रद बना दिया उन लोगों के लिए जो उसके सामने थे और आने वाली पीढ़ियों के लिये। और इसमें हमने शिक्षा रख दी ड़रने वालों के लिए।

(67) जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह तुमको आदेश देता है कि तुम एक गाय ज़बह करो। उन्होंने कहाः क्या तुम हमसे हँसी कर रहे हो। मूसा ने कहा कि मैं अल्लाह की शरण माँगता हूँ कि मैं ऐसा अज्ञानी बनूँ (68) उन्होंने कहा, अपने पालनहार से निवेदन करो कि वह हमसे वर्णन करे कि वह गाय कैसी हो। मूसा ने कहा, अल्लाह कहता है कि वह गाय न बूढ़ी हो न बच्चा, इनके बीच की हो। अब कर डालो जो आदेश तुमको मिला है। (69) फिर उन्होंने कहा, अपने पालनहार से निवेदन करो, वह बताये उसका रंग कैसा हो। मूसा ने कहा, अल्लाह कहता है कि वह गहरे पीले रंग की हो, देखने वालों को भली प्रतीत होती हो। (70) फिर वह कहने लगे, अपने पालनहार से पूछो कि वह हमसे वर्णन करे कि वह कैसी हो। क्योंकि गाय में हमको सन्देह हो गया है। और अल्लाह ने चाहा तो हम मार्ग प्राप्त कर लेंगे। (71) मूसा ने कहा अल्लाह कहता है कि वह ऐसी गाय हो कि परिश्रम करने वाली न हो, भूमि को जोतने वाली और खेतों को पानी देने वाली न हो। वह सम्पूर्ण सुरक्षित हो, उसमें कोई धब्बा न हो। बोलेः अब तुम स्पष्ट बात लाये। फिर उन्होंने उसको ज़बह किया। और वह ज़बह करते दिखाई न देते थे। (72) और जब तुमने एक व्यक्ति को मार डाला, फिर तुम एक दूसरे पर इसका आरोप लगाने लगे, जबकि अल्लाह प्रकट कर देना चाहता था जो कुछ तुम छिपाना चाहते थे। (73) तो हमने आदेश दिया कि मारो उस मुर्दे को